चाणक्य खंड काव्य

मनीष कुमार मिश्रा

© Manish Kumar Mishra 2021

All rights reserved

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

First Published in September 2021

ISBN: 9789354725654

BLUEROSE PUBLISHERS
www.bluerosepublishers.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898

Cover Design:
Muskan Sachdeva

Typographic Design:
Manish Kumar Mishra

Distributed by: BlueRose, Amazon, Flipkart, Shopclues

अनुक्रमणिका

1-प्रथम सर्ग-- (मगध)

2-द्वितीय सर्ग-(मगध त्याग)

3--तृतीय सर्ग-(तक्षशिला प्रवास)

4-चतुर्थ सर्ग-(चिन्तन)

5-पंचम सर्ग-(शक्ति एकत्रीकरण)

6-षष्ठम सर्ग-(मगध पुनरागमन)

7-सप्तम सर्ग-(राज्याभिषेक)

प्रथम सर्ग (मगध)

नृप बिंबिसार ने मगध राज,
निज बल से कभी बसाया था।
जीते चहुँदिशि अनगिनत देश,
जनपद का मान बढ़ाया था।। 1

षोडश जनपद में मगध शक्ति,
सर्वाधिक शक्तिशाली थी।
सब भरे कोष राजा के थे,
अंजुली न कोई खाली थी ।। 2

दरबार बिंबिसारा का नित्,
वीरों से सुशोभित रहता था |
हर एक दिशा में राजा के,
वैभव का डंका बजता था।। 3

फिर राजा बना अजातरशत्रु,
उसका वैभव तो आला था।
उसने सारे राजाओं को,
निज बल से विजित कर डाला ।। 4

काशी, अंग और कोसल,
सब शरण मगध के ही तो थे।
कोई था शत्रु न शेष रहा,
सब सुदिन मगध के ही तो थे।। 5

इतिहास बदलता रहता है,
अब समय हुआ परिवर्तन का।
परिवर्तन शासक वन्शों का,
परिवर्तन सत्ता,शशासन का।। 6

नूतन शासन का उदय हुआ,
जो नंद वंश कहलाया था।
अब महापद्य ने निज बल से,
सिंहासन मगध का पाया था।। 7

फिर महापदम ने भुज बल से,
सीमाओं का विस्तार किया।
जो शेष रहे थे राज्य कहीं
उन पर उसने अधिकार किया |। 8

मगध राज्य से दूर तलक,
उसने सीमाएं बांधी थी |
ऐसा कोई था राज्य न था।
जहां चली न उसकी आंधी थी।। 9

वह एक कुशल शासक भी था,

You've Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: http://www.ebooks2go.com